

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

राम

राम

२७५

॥ पदराम बिलावल ॥

राम

पेम पियाला पीजिये

राम

राम

पेम पियाला पीजिये ॥ दूजा रस छाडो ॥

राम

तामस तिवर मिटाय के ॥ चरणा चित गाडो ॥टेर॥

राम

राम

**Drink the nectar of love**

राम

राम

Drink the nectar by the cup with love full of Ram's name and give up all sensual pleasures. Get rid of the anger, ego associated with saints that 'I am greater than the saints' and bow your head at the feet of the Satguru.

राम

राम

पांच पचीं सुं बस करो ॥ बारी नव लांगो ॥

राम

राम

सरम सन संक्या तजो ॥ मन को सळ भांगो ॥१॥

राम

राम

Get control over the five senses and the twenty-five natures by drinking the juice of Ram's name. By chanting the name of Ram, cross the nine doors and go to the tenth door. Let go of the shame of the world, don't let this hesitation come into your mind about what the world will say.

राम

राम

आसण नेचळ धारियो ॥ दिल साबत रहिये ॥

राम

राम

अेक न केवळ राम कूं ॥ अे निस मुख कहिये ॥२॥

राम

राम

Sit motionless in a place which is pure, clam and chant the name Ram continuously with your mouth. So that the heart will remain pure, that is, there will be no sensual lust.

राम

राम

जन सुखदेव गुरुदेव को ॥ पूरण पत राखो ॥

राम

राम

ब्रम्हंड के घर जाय के ॥ इमरत रस चाखो ॥३॥

राम

राम

Satguru Sukhramji Maharaj says that, keep full faith in Satguru Dev and from the bunknaal reach to the house beyond this cosmos and drink the nectar to the satisfaction

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम